Impact Factor 4.574

ISSN 2349-638x

Peer Reviewed And Indexed

AAYUSHI INTERNATIONAL INTERDISCIPLINARY RESEARCH JOURNAL (AIIRJ)

Monthly Journal

VOL-V ISSUE-VIII Aug. 2018

Address
· Vikram Nagar, Boudhi Chouk, Latur.
· Tq. Latur, Dis. Latur 413512 (MS.)
· (+91) 9922455749, (+91) 8999250451

Email
· aiirjpramod@gmail.com
· aayushijournal@gmail.com

Website
· www.aiirjournal.com

CHIEF EDITOR – PRAMOD PRAKASHRAO TANDALE

उपन्यासों में चित्रित किवदंतियाँ और छत्रपति शिवाजी महाराज

विवेक सौताडेकर
(शोधछात्र)
स्वा.रा.ति.म.वि., नांदेड

शिवाजी महाराज का चरित्र-चित्रण करते समय हिंदी तथा मराठी उपन्याकारों ने इतिहास विरुद्ध चित्रण कर शिवचरित्र को हानि पहुँचाई है । इस राष्ट्रपुरुष का चित्रण करते समय उपन्यासकारों ने सावधानता नही बरती है। उपन्यासकार नैतिकता के प्रभाव में बहकर अथवा अन्य गुणों से प्रभावित होकर उनके सही गुणों का चित्रण गलत ढंग से करते हैं । इससे उनके चरित्र की हानि हुई है । अत: यह देखना आवश्यक है कि हिंदी उपन्यासों में चित्रित किवदंतियों से छत्रपति शिवाजी महाराज के चरित्र की हानि उपन्यासकारों ने किस प्रकार से की है ।

किवदंतियाँ

ऐतिहासिक नायक का महत्त्व बढाने की दृष्टि से किवदंतियाँ निर्माण होती हैं । "वास्तविक शिवाजी महाराज स्वयंभू व्यक्तित्व के थे ।"[1] उनके जीवन में अनेक नाट्यमय घटनाएँ घटी हैं और उनका चरित्र संघर्षपूर्ण होने के कारण उन्हें किवदंतियों से चित्रित करने की कोई आवश्यकता नहीं है । फिर भी हिंदी उपन्यासकारों ने अनेक किवदंतियों का चित्रण किया है जिससे शिवचरित्र को हानि पहुँची है ।

'पहला सूरज' उपन्यास में भगवतीशरण मिश्र लिखते हैं, "उन्हें खौफ इस बात का था कि बेहद निर्भीकता और साहस से भरा यह व्यक्ति कब, कहाँ कहर ढा देगा इसका कोई पता नहीं । शिवाजी महाराज को लेकर इन्हीं लोगों ने जो अफवाहें फैलाईं उन्होंने शिवाजी महाराज को और महत्त्वपूर्ण बना दिया । कुछ लोगों ने कहना शुरु किया कि उनके घोड़े को शैतान ने डैने लगा रखे हैं और इसलिए वह काफिर एक क्षण यहाँ तो दुसरे क्षण सैकडों कोस की दूरी पर दिखाई पडता है । कुछ लोगों ने यह भी कहना आरम्भ किया कि शिवा को कोई काला जादू सिद्ध है जिससे वह एक ही समय कई स्थानों पर देखा जाता है और एक ही साथ इन सभी जगहों पर कहर ढा सकता है ।[2]

छत्रपति शिवाजी महाराज का व्यक्तित्व स्वयंभू था । वे अपनी कार्यक्षमता एवं तत्परता के कारण ही प्रसिद्ध थे । उपन्यासकार लिखते हैं कि, शिवाजी के घोड़े को शैतान ने डैंने लगा था । घोड़े को डैने लगाने की बात अगर सच मानी जाए तो उस पर बैठने वाला व्यक्ति कितना चतुर और मेहनती होगा । शायद यह कल्पना उपन्यासकार के ध्यान में नहीं आयी । वे शिवाजी महाराज के चित्रण के बजाए घोडे का चरित्र-चित्रण करते हैं । शिवाजी महाराज को कोई भी काला जादू सिद्ध नहीं था बल्कि काले जादूवालों को वे हमेशा के लिए समाप्त करते थे । उनकी चतुराई, बुद्धिमत्ता, कार्यक्षमता आदि गुणों को छोडकर उपन्यासकार उनके चरित्र को गलत चित्रण से हानि पहुँचाते हैं । "अफजल वध के पश्चात् तुरंत अठराह दिनों में वे पन्हाला पर आक्रमण करते है ।"[3] तो यह काले जादू की वजह से नहीं बल्कि उनकी कार्यक्षमता, तत्परता आदि के द्योतक हैं जो समय की माँग थी।

ओंकारनाथ दिनकर शिवाजी महाराज की नैतिकता के संदर्भ में 'अरुणोदय' उपन्यास में कहते हैं कि, "आबाजी का ह्रदय उछलने लगा । सौंदर्य और यौवन की मुखरित प्रतिमा को देखकर किसका मन तरंगित न हो उठेगा । वे उसकी ओर बढे कि मन ने झटका खाया । लूट का धन स्वामी का है, इस पर तो शिवाजी राजे का ही स्वत्व है..... ठीक है.... शिवाजी राजे यह भी पाकर प्रसन्न हो जाएँगे । मुझ पर भी प्रसन्न हो जाएँगे ।"[4]

आबाजी सोनदेव कल्याण के सूबेदार की पुत्रवधू को शिवाजी महाराज को भेंट देने का निश्चित करते हैं । वे समझते हैं कि लूट का धन स्वामी का होता है । शिवाजी महाराज ने अपने सैनिकों को आदेश दिया था कि -

पर स्त्री को मातृवत मानना तथा अबला की रक्षा करना उनका प्रथम कर्तव्य होगा । इस आदेश को आबाजी सोनदेव कैसे भूल सकते हैं? अगर भूलते हैं तो वे शिवाजी महाराज के सैनिक नहीं होगे । अगर वे सचमुच शिवाजी महाराज के सैनिक हैं तो वे ऐसी गलती कैसे कर सकते हैं? इसका कारण यही है कि आबाजी सोनदेव शिवाजी महाराज को सूबेदार की पुत्रवधू अर्पित कर प्रसन्न कराना चाहते हैं ताकि उन्हें शिवाजी महाराज की राज्य व्यवस्था में उच्च पद प्राप्त हो लेकिन शिवाजी महाराज इस प्रसंग में नैतिकता की कसौटी पर खरे उतरते हैं । ऐसा भी चित्रण हुआ है कि इस प्रसंग में खुद को कुरुप मानते हैं । उसमें शिवाजी महाराज 'हमारी माँ ऐसी होती तो' ऐसा कहते हैं । हिंदी उपन्यासों में ही नहीं बल्कि मराठी उपन्यासों में भी इस प्रसंग का वर्णन मराठी उपन्यासकारोंने कुछ इसप्रकार से किया है, "अशीच आमुची माता असती सुंदर सुवती, आम्हींही सुंदर झालो असतो वदले छत्रपती." स्पष्ट है कि दुनिया का कोई भी लडका अपनी माँ को कुरुप कहने का दुस्साहस नहीं कर सकता । वे तो मातृभक्त छत्रपति शिवाजी थे । वे कैसे ऐसा कह सकते थे । फिर भी उपन्यासकार इसका वाच्यार्थ लेकर यह चित्रण करते हैं और छत्रपती शिवाजी महाराज के चरित्र को हानि पहुँचाते हैं ।

पुरंदर प्रसंग में शिवाजी महाराज अपने सैनिकों के प्रेम की खातिर राजा जयसिंह से संधि करते हैं । संधि करते समय उन्हें भारी दु:ख हुआ था क्योंकि उन्होंने लगन से, कडी मेहनत से स्वराज्य का निर्माण किया था । पुरंदर की संधि का नतीजा यह निकला था कि शिवाजी महाराज तेईस किले और इतना इलाका बादशाह के सुपुर्द करें जिससे सालाना चालीस लाख रुपया महसूल प्राप्त किया जा सके और वह स्वयं अपने लिए बारह किले और चार लाख रुपए महसूल वाला इलाका रखें । दुसरी बात यह है कि उन्हें मुगल बादशाह की नौकरी में दाखिल होने को कहा जा रहा था । तो वे बडी नम्रता से कहते हैं कि - मेरे बेट संभाजी को मेरे बदले पंचहजारी मनसब दिया जाए ।' इससे स्पष्ट है कि शिवाजी मुगल सेना में उच्च पद पर नहीं जाना चाहते थे बल्कि अपने पुत्र संभाजी को यह पद दिया था ।"[5] अत: निम्नलिखित चित्रण से शिवाजी के चरित्र को हानि पहुँची है । उपन्यासकार सत्यशकुन पुरंदर संधि का गलत चित्रण करते हैं । वे लिखते हैं -

"शिवा के सभी दुर्गों पर मुगल सुबेदार बहाल किए जा चुके थे । शिवा को मुगल सेना में जयसिंह के सेनापतित्व में उच्च पद दे दिया गया था ।"[6] शिवाजी महाराज निस्वार्थी थे इसी कारण उच्च पद हेतु उन्होंने जयसिंह से संधि नहीं की थी बल्कि स्वराज्य की रक्षा के लिए, बरबादी से स्वराज्य को बचाने हेतु सुलह की थी ।

'जीजाबाई का बेटा' इस उपन्यास में, कलम शुक्ल कहते हैं, "शिवाजी के राज्याभिषेक के लिए गोदावरी, कृष्णा, कावेरी दक्षिण की तीनों पवित्र नदियों का जल लाया गया था । उनके धर्म गुरु समर्थ रामदास का कहना था कि जब तक नर्मदा का जल नहीं आता है तब तक राज्याभिषेक अधुरा ही रहेगा।"[7]

राज्याभिषेक के समय शिवाजी महाराज को सप्त-गंगा का जल, समुद्रोदक, उष्णोदक आदि से स्नान करवाना था क्योंकि हमारी संस्कृति प्राचीन काल से भारत से भारत को एक राष्ट्र मानती आई है । अत: सभी नदियों का हरेक शुभ अवसर पर आव्हान किया जाता था । राज्याभिषेक समारोह में मोरोपंत पेशवा, दत्ताजी पंत, रघुनाथ पंत, निराजी, बालाजी, चिमणाजी आवजी, सरनोबत हंबीरराव मोहिते, त्र्यंबक पंत, रामचंद्र पंत और अनेक शास्त्री, पंडित, सरदार तथा मेहमान उपस्थित थे । "मगर समर्थ रामदास उपस्थित थे इसका कोई आधार उपलब्ध नहीं होता ।"[8] इसी कारण उनके कहने से राज्याभिषेक में अधूरापन नहीं रहता। स्पष्ट है कि समर्थ रामदास के चरित्र को उभारने का काफी प्रयास हुआ है और शिवाचरित्र की हानि की गाई है।

सन् 1672 ई. के पूर्व शिवाजी महाराज की भेंट रामदास से नहीं हुई थी । 'सन् 1672 ई. की भेंट राज्याभिषेक के उपरांत हुई थी ।'[9] अत: शुक्ल द्वारा किया हुआ वर्णन असंगत है ।

कमल शुक्ल शिवाजी के बारे में सोयराबाई के विचारों का वर्णन इस प्रकार करते हैं -

""किंतु राजाराम की माता ने उसे एक नया मंत्र देकर भेजा था । वह शंभूजी की सौतेली माता थी और शिवाजी महाराज की दुसरी पत्नी । वह अच्छी तरह जानती थी कि शिवाजी महाराज अस्वस्थ रहने लगे हैं । उनका स्वास्थ्य आवश्यकता से अधिक खराब हो गया है । तानाजी के अभाव में जीवित नहीं रह सकते हैं । वे अकाल मृत्यु को प्राप्त होंगे इसमें कोई संदेह नहीं ।"[10]

कलम शुक्ल के अनुसार सोयराबाई जानती थी कि तानाजी के अभाव में शिवाजी महाराज अधिक काल जीवित नहीं रह सकते और वह उनके पश्चात् अपने पुत्र राजाराम को राज्याभिषेक करवाएगी लेकिन शुक्ल को यह ज्ञात नहीं की परंपरा से चली आयी प्रथा का अकेली सोयराबाई कैसे विरोध कर सकती है? दुनिया की कोई भी स्त्री अपने पति के बारे में ऐसा कथन कभी नहीं करती है क्योंकि पति ही उसका परमेश्वर है। संभाजी और सोयराबाई के सम्बन्ध सौतेले माँ-पुत्र होते हुए भी अच्छे थे । "संभाजी उन्हें निर्मल मन की स्फटिक जैसी माता मानते थे ।"[11] इसी कारण शुक्ल का वर्णन इतिहास विरुद्ध है और इसके लिए कोई ऐतिहासिक आधार नहीं है । दुसरी बात यह है कि 'तानाजी की मृत्यु सं. 1670 में हुई थी ।[12] और शिवाजी महाराज की सन् 1680 में । इससे ज्ञात होता है कि तानाजी के बाद शिवाजी महाराज दस साल तक जीवित थे । अत: शुक्ल का उपर्युक्त वर्णन सही नहीं है ।

मनहर चौहान लिखते हैं, "शिवाजी प्रस्ताव रखा था - आधा राज्य संभाजी को और आधार राज्य राजाराम को दिया जाए ।"[13]

जो व्यक्ति बचपन से स्वतंत्रता के प्रति दिन-रात कार्यक्षम रहता है और जो स्वयं कुशल संगठक है, उसके दो पुत्र राज्य प्राप्ति हेतु विवाद उत्पन्न करते हैं यह बात कहाँ तक तर्कसंगत है? फिर भी सभी मानव जाति को जो एकात्मकता का पाठ पढ़ाता है वह व्यक्ति अपना राज्य आधा-आधा कैसे बाँट सकता है? इस विधान से शिवाजी महाराज के संगठन कौशल के इस गुण को ठेस पहुँचती है । परंपरा यह थी कि पिता के पश्चात् राज्य का उत्तराधिकारी बडा बेटा ही होता है । तो शिवाजी महाराज अपना राज्य अपने दो पुत्रों में कैसे बाँट सकते हैं? अत: मनहर चौहान के वर्णन से शिवचरित्र की हानि हुई है । उनके वर्णन का कोई आधार इतिहास में उपलब्ध नहीं है । हिंदी तथा मराठी उपन्यासों की ऐसी अनेक प्रचलित किवदंतियों से छत्रपति शिवाजी महाराज के चरित्र की हानि ही हुई है ।

संदर्भ :-

1. श्यामनारायण पाण्डेय, शिवाजी, पृ. 12
2. भगवतीशरण मिश्र, पहला सूरज, पृ. 248
3. गो. स. सरदेसाई, राजा शिवाजी, पृ. 51
4. ओंकारनाथ दिनकर, अरुणोदय, पृ. 118
5. बाबासाहेब पुरंदरे, शिवचरित कथनमाला, पृ. 262/263
6. सत्यशकुन, छत्रपति शिवजी, पृ. 116
7. श्रीमंत कोकाटे, शिवाजी राजांचे खरे शत्रू कोण?, पृ. 41
8. कलम शुक्ल, जीजाबाई का बेटा, पृ. 48
9. कृ.अ. केळुसकर, छत्रपति शिवाजी महाराज, पृ. 633
10. कलम शुक्ल, जीजाबाई का बेटा, पृ. 63.
11. श्रीमंत कोकाटे, शिवाजी राजांचे खरे शत्रू कोण?, पृ. 28
12. बाबासाहेब पुरंदरे, शिवचरित कथनमाला, पृ. 340
13. मनहर चौहान, सूर्य का रक्त, पृ. 137.